International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
Received: 22-06-2019; Accepted: 23-07-2019
www.educationjournal.in
Volume 4; Issue 5; September 2019; Page No. 110-113

मनोज दास की कहानियों में माटी की महक

डॉ. दयानिधि सा
सहायक प्राध्यापक व विभाग प्रमुख, महात्मा गांधी स्नातक महाविद्यालय, भुक्ता, जि.–बरगढ़, ओड़िशा, भारत

सारांश
'समुद्र की प्यास' मनोज दास के केन्द्रीय साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत कहानी संकलन–''मनोज दास के कथा ओ काहाणी'' की बहु चर्चित कहानी है। दूसरा विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि पर सृजित यह कहानी अंग्रेज हुकूमत के समय में ग्रामीण नारियों की सामाजिक स्थिति का सफल चित्रांकन करती है। समुद्र किनारे बसे हुए एक गांव के एक गरीब परिवार की सामाजिक–आर्थिक स्थिति बयां करती यह कहानी नारी समाज के प्रति पुरुष समाज की अतृप्त वासनात्मक भूख को चरितार्थ करती है।
'लक्ष्मी का अभिसार' मनोज दास की एक अलग ढंग की कहानी है। एक ग्राम बालिका का धर्मप्राण, ईश्वर विश्वासी हृदय अत्यन्त मार्मिकता से यहां शब्दांकित है। गांव के गरीब घराने के तथा अछूत जाति के लोग मन्दिर प्रवेश या ईश्वर दर्शन से किस तरह वंचित रह जाते हैं। उनके साथ सामान्य वर्ग तथा संभ्रान्त परिवार के लोग कैसे पशु बर्ताव करते हैं और उन दलितों को जहालत भरी जिन्दगी जीनी पछती है, इस पर यह कहानी फोकस करती है। गांव देहात में आज भी 'कास्टिज्म' का इतना वर्चस्व है कि अछूत या निम्न जाति के लोग मन्दिर प्रवेश से वर्जित होते हैं, ईश्वर के दर्शन दूर से ही करने पड़ते हैं। विश्व प्रसिद्ध जगन्नाथ मन्दिर में विदेशी इसाइयों को प्रवेश पर पाबन्दी लगाना हमारी इसी जातिवादी संकीर्ण सोच की ड्रामेबाजी है।
'जलमग्न द्वीप' या 'जलमग्न टापू' मनोज दास द्वारा रचित एक समस्या प्रधान कहानी है। उत्तम पुरुष शैली में रचित यह कहानी हमें अपनी जन्म माटी के प्रति न केवल आकर्षण पैदा करती है, बल्कि उसके लिए मर मिटने का जज्बा पैदा करती है। मनोज दास ने अपने निजी जीवन की प्रत्यक्ष अनुभूतियों को यहां कहानी की शकल दी है। लेखक का अपनी जम्नभूमि के प्रति असीम प्यार यहां उमड़ पड़ा है। आजादी के बाद आधुनिक भारत–निर्माण के सपनों को साकार करती विराट बांध परियोजना से उनके गांव समेत पूरे इलाके के कई गांव जलमग्न हो गए, डूब गए। वहां के लोगों को अपनी मग्न माटी छोड़कर दूसरी जगहों पे विस्थापित होना पड़ा। पुनर्विस्थापन का सन्ताप वहां के लोगों को झेलना पड़ा। खुद लेखक मनोज दास अपने गांव, अपनी माटी से बिछड़ने, दूर होने के दुख–सन्ताप से ग्रसित दिखाई पड़ते हैं।

मूल शब्दः जातिवादी, जलमग्न, ईश्वर, सन्ताप, पुरस्कृत

प्रस्तावना
मनोज दास आधुनिक ओड़िया कथा साहित्य के युगधर्मी कथाशिल्पी हैं। आपने अपने युगान्तकारी कथा साहित्य के माध्यम से पूरे ओड़िया कथा साहित्य को प्रभावित किया है। आपके द्वारा सृजित ओड़िया उपन्यास – 'अमृतफल', 'प्रभंजन', 'बुलडोजर्स' और 'प्रायश्चित' आधुनिक सभ्य शिक्षित समाज के लोगों की जीवन समस्याओं पर न केवल कुठाराघात करते हैं, समाधान के उपायों पर तबज्जो देते हैं। आपके द्वारा रचित साहित्य साधना के लिए आपको सरस्वती सम्मान, सारला सम्मान, केन्द्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा पद्मश्री सम्मान (2001) से सम्मानित किया गया है। आपकी कहानियां आज के समाज के सामाजिक–राजनीतिक सरोकारों पर व्यंग्यात्मक चोट करती हैं। आपकी कथाकृतियों में ओड़िशा प्रदेश की माटी की महक दृष्टिगोचर होती है।

विषय प्रवेश
समुद्र की प्यास' मनोज दास के केन्द्रीय साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत कहानी संकलन–''मनोज दास के कथा ओ काहाणी'' की बहु चर्चित कहानी है। दूसरा विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि पर सृजित यह कहानी अंग्रेज हुकूमत के समय में ग्रामीण नारियों की सामाजिक स्थिति का सफल चित्रांकन करती है। समुद्र किनारे बसे हुए एक गांव के एक गरीब परिवार की सामाजिक–आर्थिक स्थिति बयां करती यह कहानी नारी समाज के प्रति पुरुष समाज की अतृप्त वासनात्मक भूख को चरितार्थ करती है। कहानी की शुरुआत में ही पता चलता है कि अंग्रेज हुकूमत समुद्र किनारे की उस बस्ती को हटाना चाहती है, जहां मछुआ लोग रहते हैं। उसी बस्ती में हाडू मलिक, कण्डु, दलेई, बीरा, गोपाल, शुभ्रा, लाला जैसे लोगों के अन्दर अपनी जन्मभूमि के प्रति अपार स्नेह है, लगाव है।
दूसरा विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि पर रचित 'समुद्र की प्यास' (1950) मनोज दास की पहली सार्थक कहानी है, जिसे आपने अपने कैशोर्य काल में लिखा था। किशोर मन की उत्ताल तरंगों के बीच एक नारी के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त होना मनोज दास के महान व्यक्तित्व का परिचायक है। समुद्र के तटवर्ती ग्राम परिवेश, आर्थिक दुरावस्था से जूझते एक परिवार की त्रासदी इसमें चित्रित है। एक ग्रामीण नारी के प्रति गहरी सहानुभूति इस कहानी के प्रत्येक पृष्ठ में उमड़ पड़ी है। पति की विरह वेदना में संतप्त एक नारी के प्रति अंग्रेज पुलिस अधिकारी की हैवानियत इतनी पाशविक हो उठती है कि वह उस औरत के मासूम बच्चे की भी गला दबाकर हत्या कर देता है और नारी का बलात्कार करता है।
हाडू मलिक गांव का प्रमुख व्यक्ति है। गांव में उसका मान–सम्मान है। पूरा गांव उनकी इज्जत करता है। ब्रिटिश हुकूमत समुद्र किनारे की उस बस्ती को खाली कराने के लिए साजिश रचती है और मछलीमारों की नावों को जलाकर राख कर देती है। गांव को उजाड़कर पर्यटन स्थल बनाने की अंग्रेजों की मनसा देखकर हाडू मलिक अफसोस जताने लगता है। हाडू मिलक मन ही मन सोचता है –''यह कैसे मुमकिन हो सकता है कि उसे यह घर बार समुद्र, तटवर्ती इलाका, बालू की ढ़ेर, दो–चार हाथ धान का खेत, सब कुछ छोड़ कर भागना पड़ेगा।

उसके पिताजी के समय एक दो बीघा जमीन उनके पास थी। बाद में वह भी चली गई। जमीन भले ही उसने छीन ली गई है, पर वह तो यहां की हवा–पानी, जमीन समुद्र से चला नहीं गया है। यहां की माटी से उसे कोई छुड़वाकर दूर कर सकता है, यह बात उसके दिमाग में नहीं आ सकी। वह सिर पर हाथ रखकर बैठ गया। कैसी बिडम्बना है यह। सुख–दुख के जीवन अनुभव भी उसे अभी याद नहीं हो रहे हैं।''01

हाडू मलिक का बेटा गोपाल फौज में नौकरी करता है। दूसरे विश्व युद्ध के दौरान भारतीय जवान अंग्रेजी हुकूमत की तरफ से विपक्ष के साथ युद्ध में शामिल हुए थे। गोपाल भी उसी महायुद्ध में इंग्लैण्ड की तरफ से युद्ध लड़ रहा है। हाडू मलिक और गोपाल की पत्नी शुभ्रा का ध्यान युद्ध की खबरों में लगा रहता है। शुभ्रा अपने पति की सुरक्षा को लेकर हमेशा चिन्तित रहती है। उसकी गोद में छोटा सा बच्चा है–सतु। सतु के सहारे शुभ्रा अपना एकान्त जीवन व्यतीत कर रही है। उनके बूढ़े ससुर उनके साथ सुख–दुख बांट कर शुभ्रा का मन भुलाने की कोशिश करते हैं।

गोपाल का मौसेरा भाई लाला शुभ्रा के साथ विश्वासघात करता है। वह किसी भी तरह से शुभ्रा को बहला–फुसला कर अपना घर ले जाता है। वह अपने घर में शुभ्रा के साथ दुर्व्यवहार करने की कोशिश करता है। शुभ्रा वहां से भाग निकलने की कोशिश तो करती है पर कामयाब हो नहीं पाती। लाला उसे कुछ अंग्रेज अधिकारियों के हवाले कर देता है। अंग्रेज अधिकारी शुभ्रा के साथ बलात्कार करना चाहता है। शुभ्रा का बच्चा सतु जब उनके काम में व्याघत उत्पन्न करता है, गुस्से में आकर वह राक्षस बच्चे का गला दबाकर मार देता है और खिड़की से बाहर फेंक देता हे। फिर वह शुभ्रा के साथ बलात्कार करके अपनी वासना तृप्त करता है।

शुभ्रा को अपनी हवस का शिकार बनाकर बड़ा साहब अपनी हैवानियत साबित करता है। उधर गंभीर सुनसान के बीच समुद्र का गर्जन अधिक से अधिक तेज होने लगता है। मानो वह शुभ्रा की बेइज्जती को लेकर क्षुब्ध हो उठा हो, अपना आक्रोश व्यक्त करने लगा हो। लेखक के शब्दों में ''दोनों हाथों से सतु का गला पकड़कर शून्य में गोरा साहब ने झूला दिया। उसके बाद वह पूरी ताकत लगाकर हैवान बनकर सतु का गला दबाने लगा। उसका गला धीरे–धीरे क्षीण से क्षीण होने लगा। बच्चे की दोनों आंखों के कौवे बाहर निकल आए। गोरा साहब ने तृप्त स्वर में खिड़की से सतु के निस्तेज निष्प्राण शरीर को बाहर फेंक दिया।''02

शुभ्रा ऐसी बदकिस्मत औरत है, जो अपने पति से दूर होकर अंग्रेज अधिकारी की हवस की शिकार होकर अपना सबकुछ खो बैठती है। यह कहानी न सिर्फ नारी की स्थिति से हमें परिचित कराती है बल्कि नारी सुरक्षा को लेकर हमें गंभीर चिन्तन–मनन के लिए प्रेरित करती है। नारी स्वातन्त्र्य की वकालत करती यह कहानी हमारे अन्दर नारी के हक की लड़ाई लड़ने का जज्बा पैदा करती है।

यह कहानी आजादी के पहले अंग्रेज अधिकारियों के दुष्ट व्यवहार को भी रेखांकित करती है। उस समय देश में नारी सुरक्षित नहीं थी। नारी को उस समय केवल भोग विलास की वस्तु माना जाता था, उसकी असमत के साथ खेला जाता था। अंग्रेज ऑफिसर भारतीय नारियों के साथ कई तरह के दुष्ट आचरण करते थे, पुरुष देखते ही रह जाते थे, उनके सामने न तो मुंह खोल पाते थे और न ही विरोध कर पाते थे। समन्दर जिस तरह दूसरों की प्यास बुझाता है, पर खुद अतृप्त रहता है, उसका हृदय हमेशा उद्धेलित रहता है, उसी प्रकार नारी भी अपनी अतृप्त काम वासना को लेकर घुटती रहती है। वह पर पुरुष की वासना की शिकार होकर कलंकित जीवन जीने के लिए मजबूर होती है।

गांव के प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्र खींचते हुए लेखक लिखते हैं– ''समुद्रमाला की गोद से देखते ही देखते सूर्य आकाश के सीने में दौड़ पड़ा। इस समय का प्रभाती आकाश बड़ा ही नरम स्नेहासिक्त था। झट से तीन–चार हाथ उपर उठकर कोमल सूर्य का विक्रम बढ़ने लगा। ज्वार, समय की उताल समुद्र की लहरों को स्पर्श करती सुनसान मछुआरों की बस्ती। कदाचित वहां के घास फूंस छप्पर घरों के उपर धीरे–धीरे धूप पड़ने लगी। इसी समय आखरी बार ढोल के उपर डबाडब प्रहार करता हुआ नगाड़ेवाला चौकीदार बस्ती पार करके आगे बढ़ने लगा और पहाड़ जैसे बालू ढेर से लेकर आगे बढ़े हुए रास्ते की ओर चलते हुए अदृश्य हो गया।''03

''पश्चिम भाग में गांव के आखिरी घर से पचास हाथ की दूरी पर सुवर्णरेखा नदी का अन्तिम छोर। दक्षिण की ओर सौ हाथ छोड़कर समन्दर। समन्दर किनारे नमक बनाना जितना सहज, मछली पकड़ना भी उतना ही सरल। इसके अलावा बड़ी (इलीसी माछ) मछली पर जिसने नजर दौडाई है, वही जानता है। अतीत के किसी महापुरुष की याद करते हुए छान बीन करने से पता चलेगा कि समन्दर धीरे–धीरे मुड़ता हुआ हमसे दूर चला जा रहा है। इसके साथ–साथ अपनी एकान्त अनजान जानकारी के साथ उनकी बस्ती भी समुद्र से नाता तोड़ती जा रही है। उनकी जन्मभूमि खुद समुद्र की देन है, किसी जमींदार की खैरात नहीं।''04

गोपाल का ममेरा भाई लाला वीरेन्द्र शुभ्रा के प्रति झूठी सहानुभूति व्यक्त करता हुआ कहता है –''मैं तो उसी समय से बोल रहा हूं, फूफा जी भले ही संसार छोड़कर चले गए, गोपाल भले ही तुम्हें छोड़कर फौज कैंप में था, कहीं भी रहने लगा है, पर मैं तो हूं। चलो मेरी मां–बुढ़िया के साथ तुम रहोगी।''05

ब्रजनाथ रथ के शब्दों में–''समन्दर किनारे के गांवों के उपर दूसरे विश्वयुद्ध का कुप्रभाव, इसके आतंक, शुभ्रा जैसी बेबस–सरल विश्वासी युवतियों की असहायता का मौका उठाकर लाला जैसे धोखे बाज विश्वासघात का धोखे–फरेब, अंग्रेज सैनिकों की काम वासना की तृप्ति के लिए शुभ्रा जैसी सरल ग्रामवधू का निर्मम बलात्कार और उसके प्यारे–नन्हें बच्चे की अमानुषिक हत्या पाठक मन में युगीन संवेदना के साथ आक्रोश पैदा करती है। यही एक सार्थक साहित्य स्रष्टा की लेखनी की अदभूत शक्ति है, जिसे मित्र मनोज दास ने आज से पचास साल पहले अपनी पहली सार्थक कहानी में प्रमाणित कर दिया है।''06

'लक्ष्मी का अभिसार' मनोज दास की एक अलग ढंग की कहानी है। एक ग्राम बालिका का धर्मप्राण, ईश्वर विश्वासी हृदय अत्यन्त मार्मिकता से यहां शब्दांकित है। गांव के गरीब घराने के तथा अछूत जाति के लोग मन्दिर प्रवेश या ईश्वर दर्शन से किस तरह वंचित रह जाते हैं। उनके साथ सामान्य वर्ग तथा संभ्रान्त परिवार के लोग कैसे पशु बर्ताव करते हैं और उन दलितों को जहालत भरी जिन्दगी जीनी पछ़ती है, इस पर यह कहानी फोकस करती है। गांव देहात में आज भी 'कास्टिज्म' का इतना वर्चस्व है कि अछूत या निम्न जाति के लोग मन्दिर प्रवेश से वर्जित होते हैं, ईश्वर के दर्शन दूर से ही करने पड़ते हैं। विश्व प्रसिद्ध जगन्नाथ मन्दिर में विदेशी इसाइयों को प्रवेश पर पाबन्दी लगाना हमारी इसी जातिवादी संकीर्ण सोच की ड्रामेबाजी है।

गांव की सरल–हृदयी, भावुक, धर्मप्राण लक्ष्मी ईश्वर के प्रति समर्पित है। वह हर पल ईश्वर भक्ति में ही जुटी रहती हे। जैसे ही उसे मन्दिर पुजारी से निजात मिलती है वह चुपके से भगवान का दर्शन कर अती है। दोपहर को जब मन्दिर का बूढ़ा पुजारी सो जाता है, लक्ष्मी चुप चाप मन्दिर में प्रवेश करती है। मन्दिर में प्रवेश करके भगवान के चरणों में दण्डवत प्रणाम करती है। दो मिनट तक मुग्ध होकर भगवान को निहारने के बाद लक्ष्मी भगवान से वार्तालाप करती है–''मुझे आप पहचान तो रहे हैं? मैं लक्ष्मी, ओह भगवान। महीने भर में तुम्हारे पास आने की कोशिश में जुटी हुई थी, लेकिन पण्डित द्वार पर बैठा रहता है। आज बूढ़ा पुजारी सो गया है। है भगवान। पण्डित क्या रात को भी इसी

तरह खर्राटे मारता है। तुम्हें नींद कैसे आ जाती है भगवान। हि... ..हि....। हमारे स्कूल पण्डित ऐसे ही खर्राटे मारते हैं। अच्छा भगवान, पण्डित लोग क्यों खर्राटे मारते हैं। मैं जब खर्राटे मारना सीखूंगी तो पण्डित बन जाउंगी? नहीं नही भगवान, तुम कभी भी ऐसा आसान वरदान दे बैठना।''07

बाल सुलभ मनोवृत्तिवाली लक्ष्मी अपने भगवान को सब कुछ मानती– समझती है। वह अपने हर सुख दुख में भगवान को भागीदर मानती है। भगवान के प्रति पूर्ण रुप से समर्पित पांच–सात साल की लक्ष्मी अपना सारा सुख–दुख भगवान को सुनाती है। वह भगवान से गुहार लगाती है कि, ''अच्छा भगवान। पिताजी को कुछ रुपए क्यों नहीं दिला देते? मैंने पिताजी से कहा, 'मुझे एक फ्रॉक चाहिए।' पिताजी ने मां से कहा– 'मेरी बेटी कभी कुछ नही मांगती। आज मैं जरुर उसके लिए एक फ्रॉक खरीद दूंगी।''08 पिताजी और मां दोनों मुझे साथ लेकर फ्रॉक खरीद ने के लिए निकले। पर भगवान। जैसे ही हम लोग घर से निकले अचानक एक भयानक पूंछोवाला व्यक्ति आ धमका। वह पिताजी को रुपया मांगने लगा। पिताजी जितने रुपए मेरे फ्रॉक के लिए पकड़े सारे रुपए उन्हें दे दिए। हर सात दिन के बाद वह व्यक्ति आता है और लाठी दिखाकर व्याज के तौर पर सारा रुपया छीन कर ले जाता है। क्योंकि लक्ष्मी के पिताजी ने उनसे कुछ रुपए कर्ज ले रखें हैं।

लक्ष्मी अपने सुख–दुख के साथी भगवान से विनयवनत स्वर में कहती है कि उनका परिवार बहुत मुश्किल से गुजारा कर रहा है। उनकी आर्थिक हालत इतनी खराब है कि उनके लिए एक फ्राक भी खरीद नहीं पा रहे हैं। लक्ष्मी की मां अपनी साड़ी से उसके लिए एक फ्रॉक सीलने बैठती है। तभी अचानक वह सूदखोर व्यक्ति आ धमकता है और दरवाजे पर लाठी प्रहार करता हुआ गरजने लगता है। लक्ष्मी की मां झूठ–मुठ में कह देती है कि लक्ष्मी के पिताजी घर से बाहर गए हैं, सात दिन बाद घर वापस लौटेंगे। मां को झूठ बोलता हुआ देख लक्ष्मी दुखी हो उठती है। क्योंकि उनके पिताजी घर पर ही मौजूद हैं। लक्ष्मी की मां उसे गोद में लेकर कहती है कि लक्ष्मी उससे कई गुना अच्छी इनसान बनेगी, अभाव–असुविधा में भी पड़कर वह कभी झूठ नहीं बोलेगी।

लक्ष्मी मन्दिर में प्रवेश करके भगवान से ढेर सारी बातें करती है, अपनी पूरी दास्तान सुनाती है। वह भगवान से विनती करती है कि उनके पिताजी के लिए कुछ रुपए–पैसे का प्रबन्ध कर दें, ताकि उनकी समस्या दूर हो जाय। भोली लक्ष्मी अपने प्रभु से कहती है–''छोड़ो भगवान, मैंने बहुत सारी बातें कह दीं। जबकि असली बात तो कही ही नहीं। मैं इतनी मूर्ख हूं, उस दिन सपने में मैंने आपको देखा, कितनी खुश हो गई। लेकिन तुमने क्या कहा मैं समझ न पाई। तुम फिर से एक बार अपनी सुविधा से मुझे सारी बातें सपने में बताओगे–इतना ही वर मांग रही थी। और तुम पण्डित जी को इसी तरह दोपहर सुला पाते, तो मैं कितनी खुशी से तुम्हारे पास आ सकती।''09

मन्दिर पुजारी के खर्राटे मारना बन्द होने की आहट पाते ही लक्ष्मी चौकन्ना हो जाती है, वहां से जल्दी चलने को उठती है। चलते–चलते चढ़ावा के दो केले पकड़कर निकल पड़ती है। बूढ़ा पण्डित की नजर लक्ष्मी पर पड़ जाती है और उसे दौड़ाने लगता है। लक्ष्मी भागती हुई एक तालाब में घुस जाती है। वह सहमी हुई है और हाथ में दो केले पकड़ी हुई है। पण्डित जी उससे दोनों केले छीन लेते हैं। लक्ष्मी के पिताजी उसे वहां से साथ पकड़कर घर ले आते हैं। लक्ष्मी को इस घटना से इतना सदमा पहुचता है कि उसे तेज बुखार हो जाता है। वह उस बुखार से निजात नहीं पाती और मृत्यु को प्राप्त हो जाती है। कुछ दिनों बाद पण्डित जी तेज बुखार से पीड़ित हो जाते हैं। वह भगवान से पश्चाताप भरे स्वर में प्रार्थना करते हैं कि ''प्रभु। अगले जन्म में यह पापी गूंगा बन कर पैदा हो।''10

ईश्वर विश्वासी, सरल हृदयी लक्ष्मी की मौत से पाठक का रुह कांप उठता है। बाल सुलभ मनोवृत्ति से भगवान के पास से दो केले उठा लाने का इतनी बड़ी सजा लक्ष्मी को मिलती है कि वह हमेशा के लिए ही आंख मूंद लेती है। इस दुखद स्थिति को श्री प्रमोद कुमार महान्ती के इन शब्दों से महसूस किया जा सकता है–''मन्दिर पण्डित की धैर्यहीन कटुक्ति का जो भयावह परिणाम इस कहानी में हुआ है उसे बर्दास्त कर पाना बड़ा मुश्किल है। लेकिन इसके लिए जिन्दगी भर पण्डित जी पीड़ित व सन्तप्त हुए होंगे, इसका ईशारा कहानी में मिलता है। देव शिशु कन्या लक्ष्मी। वह हमेशा के लएि हमें विचलित करने के लिए हमारी चेतना शक्ति के किसी कोने में कहीं बसी हुई है। इस कहानी को पढ़कर साहित्यिक महापात्र नीलमणी साहु ने रोते हुए कहा था–''मनोज ! तुमने लक्ष्मी को क्यों मार दिया ?''11

'जलमग्न द्वीप' या 'जलमग्न टापू' मनोज दास द्वारा रचित एक समस्या प्रधान कहानी है। उत्तम पुरुष शैली में रचित यह कहानी हमें अपनी जन्म माटी के प्रति न केवल आकर्षण पैदा करती है, बल्कि उसके लिए मर मिटने का जज्बा पैदा करती है। मनोज दास ने अपने निजी जीवन की प्रत्यक्ष अनुभूतियों को यहां कहानी की शकल दी है। लेखक का अपनी जम्नभूमि के प्रति असीम प्यार यहां उमड़ पड़ा है। आजादी के बाद आधुनिक भारत–निर्माण के सपनों को साकार करती विराट बांध परियोजना से उनके गांव समेत पूरे इलाके के कई गांव जलमग्न हो गए, डूब गए। वहां के लोगों को अपनी मग्न माटी छोड़कर दूसरी जगहों पे विस्थापित होना पड़ा। पुनर्विस्थिापन का सन्ताप वहां के लोगों को झेलना पड़ा। खुद लेखक मनोज दास अपने गांव, अपनी माटी से बिछड़ने, दूर होने के दुख–सन्ताप से ग्रसित दिखाई पड़ते हैं।

मनोज दास बचपन से ही अपने पिताजी के साथ शहर में रहने लगे थे। गांव से उनका सम्बन्ध लगभग टूट चुका था, कभी कभार ही उन्हें अपने गांव में आने जाने का मौका मिला करता था। जैसे ही उन्हें पता चला कि उनके गांव के आस पास कोई विराट बॉन्ध परियोजना बनने जा रही है, अनेक गांव समेत उनका गांव भी जलमग्न होने जा रहा है, उनका पूरा परिवार रो उठता है। उनके इंजीनियर पिताजी विचलित हो उठते हैं, उनके मां की आंखों से आंसू थमते नहीं, बालक मनोज दास भी रो पड़ते हैं। अपनी जम्न माटी पूर्व पुरुषों की स्मृतियां, वहां के देवी–देवता सभी को याद करते हुए परिवार के लोग वेदनामय हो उठते हैं।

'विराट बांध परियोजना' से गावं तथा आस पास का पूरा इलाका डूबने की खबर पाते ही गांव के लोग शहर आकर लेखक के पिताजी के सामने अपनी जन्मभूमि के हवा पानी, माटी, खेत खलिहान, पेड़–पौधे के प्रति स्नेह–प्रेम जाहिर करने लगते हैं। अपने अंचल की गौरव गाथा, हवा–पानी के साथ मिले हुए पूर्व पुरुषों की यादें तथा देवी–देवताओं की दैवी शक्ति, खेतों की उर्वरा शक्ति के दास्तान सुनाने लगते हैं। गांव के लोग समूह स्वर में कहते हैं–''सबकुछ जल गर्भ में विलीन हो जाएंगे बाबू ? हम लोग कितने अभागे हैं, तुम्हारे जैसे होनहार बेटा पैदा करके भी प्रकृति प्रदत्त जन्ममाटी छोड़ना पड़ेगा ?''12 वयोवृद्ध लोग अपनी–अपनी आन्तरिक वेदना व्यक्त करके आंखें से आंसू पोछने लगते हैं।

मनोज दास के पिताजी गांव वालों को सान्त्वना देते हुए कहते हैं कि यही परिवर्तन का नियम है। हमेशा सारी बातें एक जैसी नहीं होती। दुनिया परिवर्तनशील है, वह हमेशा बदलती रहती है। सरकार की विकासोन्मुखी योजनाओं का मुख्य अंग है यह विराट जल परियोजना। इससे प्रदेश के बड़ी संख्या के किसानों को सिंचाई के लिए पानी मिल सकेगा, सूखा–अकाल की स्थिति से मुक्ति मिल सकेगी। उपर से सरकार विस्थापितों के लिए मुआवजा के साथ–साथ रहने बसने के लिए गांव बसाने का

आस्वासना भी दे रही हैं। फिर भी किसानों का मन नहीं मानता, वे अपनी माटी मां से दूर होना नहीं चाहते।

गांव के लोग इस परियोजना के विरोध में सरकार के खिलाफ मोर्चाबन्दी करते हैं। लेखक के शब्दों में, ''गांव में सभा–समिति पंचायत बैठने के बाद लोगों ने दाल–चावल रासन सामान पकड़ कर शहर में आकर शोभा यात्रा निकाली थी। वह एक दयनीय दृश्य था। कार या मोटर सायकिल नजदीक आ जाने पर लोग चौंक जाते थे। भीगे हुए माचिस के तिल की तरह जलने से पहले ही बूझ जाने जैसे उनके नारे अभ्यास के बिना उच्चरित होने से पहले ही बन्द पड़ जाते थे। मजबूत नेतृत्व की कमी की वजह से उनका आन्दोलन ठप हो गया था। अन्त में परियोजना निश्चित रुप से कार्यकारी होने की जानकारी पाकर आन्दोलनकारियों ने अपना आन्दोलन बन्द कर दिया था।''13

आखिर अंचल वासियों के विरोध के बाबजूद डैम का निर्माण हो ही गया। लोगों को अपनी माटी–मां से दूर जाकर नई जगहों में विस्थापित होना पड़ा, पुर्वविस्थापन का दंश उन्हें भोगना ही पड़ा। डैम निर्माण के तीन साल बाद डैम के बीचोंबीच एक टापू में पिकनिक मनाने की योजना से लेखक के पूरे परिवार को अपनी जन्मभूमि से तादात्म्य स्थापित करने का मौका मिलता है। पूरी एक टीम उस जलमग्न टापू में पिकनिक मनाने के लिए आती है। लेखक अपने निजी अनुभव व्यक्त करते हुए लिखते हैं–''हम लोग पहाड़ के उपर चढ़ने लगे। पिताजी को अनेक लोग और अनेक लोगों को पिताजी ने प्रणाम किया। मुझे अनेक लोगों ने स्वागत किया और पुटु को भी। मैंने कुछ लोगों को थोड़ा बहुत पहचाना भी। मां के पास जाकर कुछ वयोवृद्ध लोगों ने पिछले सात साल की वियोग व्यथा पर आंसू बहाए। अब तक कितने लोग दूसरी दुनिया को चले गए हैं, उसका भी हिसाब–किताब उन्होंने लगाया।''14

शाम होते–होते अचानक मौसम बदलने लगा, आसमान में बादल घिरने लगे, तेज हवा बहने लगी। बिगड़ते मौसम के मद्देनजर लोग वहां से जल्द ही निकल जाने के लिए तत्पर हो उठते हैं और नाव पकड़कर चले आते हैं। पर उस निर्जन टापू पर एक अबोलकरा गूंगा व्यक्ति रह जाता है। वह जीद पकड़ बैठता है कि भले ही वह वहां मर जाएगा पर अपनी माटी मां को छोड़कर नहीं आएगा। रात को तेज बारिश होती है, साथ में तेज हवा भी बहती है। लेखक के पिताजी का मन नहीं मानता, इस भयानक परिस्थिति में रात को नाव पकड़कर अबोलकरा के पास पहुंचकर सही सलामत उसे उस टापू से निकाल लाते हैं, उसकी जान बचा लेते हैं।

पिताजी उस व्यक्ति को साथ में लाकर कहते हैं–''उसे कपड़ा बदलने के लिए कुछ दो, धोती, साड़ी कुछ भी। उस आलमारी पर एक कम्बल है, लाके दो। जब पता चला टापू का डूबना निश्चित है, लंच पकड़कर गया। तब तक मन्दिर का शीर्ष भाग अदृश्य हो चुका था। सिर्फ एक पत्थर और ये महाशय बचे थे। ये बिना रोक–टोक के चले आए। वापसी में इन्जन खराब हो गया। हादसे से बाल–बाल बचे। मैं अभी आया, तुम लोग खाना खालो।''15 इतना कहकर पिताजी चले गये। मां ने उस व्यक्ति को खाने को दिया। पिताजी शान्ति से आराम करने लगे थे। लेखक और उनकी बहन दोनों ऐसे नेक इनसान को पिताजी के रुप में पाकर खुद को खूब किस्मत महसूस कर रहे थे।

वास्तव में यह कहानी मनोज दास के यथार्थ जीवन अनुभव का जीवन्त दस्तावेज है। यह कहानी गांव–देहात के लोगों के अपनी माटी मां के प्रति प्रेम को शतसः जाग्रत कराती है। ग्रामीण लोगों में अपनी जन्म भूमि के प्रति इतना प्रेम होता है कि वहां की धूल मिट्टी को अपने सीनें में लगाकर परम आनन्द प्राप्त करते हैं। अबोलकरा एक ऐसा ही ग्रामीण व्यक्ति है जो एकान्त रुप से मग्न माटी या मग्न टापू में रहने को तैयार है, चाहे वहां उसकी जान हो क्यों न चली जाय। उसकी बूढ़ी मां और एक कुत्ता, एक बिल्ली सब भले ही वहां मर गए हों, फिर भी अपनी जन्म भूमि से इतना लगाव है कि वहां से हिलने को तैयार नहीं है। इस कहानी में विस्थापन की पीड़ा को श्री चन्द्रशेखर रथ के इन शब्दों में भली भांति समझा जा सकता है–''मग्न उपत्यका यानी टापू से विस्थापित लोग अपने प्रभावहीन प्रतिवाद के बाबजूद जन्म माटी का मोह तोड़ न पाकर, आकुल व्याकुल होकर वहां की धूल–मिट्टी में लेटने के बाद सब इधर उधर बिखर जा रहे हैं। जल प्लावन के समय घर बार, पेड़–पौधे, पहाड़–पर्वत जलमग्न होते समय गांव से प्रेम–स्नेह करने वाले लोग जान बचाकर भाग जाते हैं।''16

कृतज्ञता

इस शोध पत्र को तैयार करने में हमारे महाविद्यालय के प्राध्यापक श्री अन्तर्यामी साहू और श्री अनिल कुमार देवता का विशेष सहयोग रहा। गुरुदेव डॉ. रामनारायण पटेल जी प्रेरणा स्वरुप यह शोध पत्र संपूर्ण हो सका। हमारे महाविद्यालय की लाइब्रेरी से शोध विषयक सारी सामग्री जुटाने में मुझे सोहलत हुई। आप सभी के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापन करता हूं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मनोज्ञ मनोज गल्पमाला सं.–विजयानन्द सिंह, विद्यापुरी कटक–2013, पृष्ठ –02
2. मनोज्ञ मनोज गल्पमाला सं.–विजयानन्द सिंह, विद्यापुरी कटक–2013, पृष्ठ –12
3. मनोज्ञ मनोज गल्पमाला सं.–विजयानन्द सिंह, विद्यापुरी कटक–2013 पृष्ठ –14
4. मनोज्ञ मनोज गल्पमाला सं.–विजयानन्द सिंह, विद्यापुरी कटक–2013 पृष्ठ –14
5. मनोज्ञ मनोज गल्पमाला सं.–विजयानन्द सिंह, विद्यापुरी कटक–2013 पृष्ठ –16
6. मनोज्ञ मनोज गल्पमाला सं.–विजयानन्द सिंह, विद्यापुरी कटक–2013 पृष्ठ –44
7. मनोज्ञ मनोज गल्पमाला सं.–विजयानन्द सिंह, विद्यापुरी कटक–2013 पृष्ठ –45
8. मनोज्ञ मनोज गल्पमाला सं.–विजयानन्द सिंह, विद्यापुरी कटक–2013 पृष्ठ –46
9. मनोज्ञ मनोज गल्पमाला सं.–विजयानन्द सिंह, विद्यापुरी कटक–2013 पृष्ठ –47
10. मनोज्ञ मनोज गल्पमाला सं.–विजयानन्द सिंह, विद्यापुरी कटक–2013 पृष्ठ –48
11. मनोज्ञ मनोज गल्पमाला सं.–विजयानन्द सिंह, विद्यापुरी कटक–2013 पृष्ठ –51
12. मनोज्ञ मनोज गल्पमाला सं.–विजयानन्द सिंह, विद्यापुरी कटक–2013 पृष्ठ –196
13. मनोज्ञ मनोज गल्पमाला सं.–विजयानन्द सिंह, विद्यापुरी कटक–2013 पृष्ठ –197
14. मनोज्ञ मनोज गल्पमाला सं.–विजयानन्द सिंह, विद्यापुरी कटक–2013 पृष्ठ –199
15. मनोज्ञ मनोज गल्पमाला सं.–विजयानन्द सिंह, विद्यापुरी कटक–2013 पृष्ठ –203
16. मनोज्ञ मनोज गल्पमाला सं.–विजयानन्द सिंह, विद्यापुरी कटक–2013 पृष्ठ –203